5 नवंबर 2022
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532

मासिक जागरण पत्रिका

महतारी नरबदा

नर्मदा नदी जो परिक्रमा के लिए विख्यात है, नर्मदा ने सम्पूर्ण समाज को एकाकार कर दिया है।
पढिए नर्मदा परिक्रमा व जनजातीय गौरव दिवस पर प्रकाश डालता जाग्रत मालवा का यह अंक

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: 1800 103 5555

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 दिसम्बर 2022 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 02 अंक : 04

मार्गशीर्ष/शुक्ल (अगहन)
युगाब्द ५१२४

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341

Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

सनातन संस्कृति में परिक्रमा का बहुत महत्व है। इसे अत्यन्त पुण्य कार्य माना जाता है। जब हम मन्दिर में भगवान के दर्शन करने जाते हैं तो परिक्रमा करना नहीं भूलते। जब परिक्रमा करते हैं तब यह भी ध्यान रखते हैं कि जिसकी हम परिक्रमा कर रहे हैं वह हमारे दाहिनी तरफ हो। वैसे तो परिक्रमा कई पवित्र स्थानों की होती है परन्तु पुण्य सलिला माँ नर्मदा की परिक्रमा का हमारे धर्म ग्रंथों में एक विशेष महत्व है। अखिल विश्व में एक ही ऐसी पावन नदी है जिसकी परिक्रमा करने का अलग ही महत्व है। **अगर नियमपूर्वक नर्मदा की परिक्रमा की जावे तो वह तीन वर्ष तीन माह और 13 दिन में होती है।** परिक्रमावासी लगभग 1312 कि.मी. दोनों तटों पर निरन्तर पैदल चलकर माँ नर्मदा की परिक्रमा करते हैं। नर्मदा परिक्रमा उद्गम स्थल अमरकंटक से प्रारम्भ होकर यहीं पर संपूर्ण होती है। नर्मदा विंध्याचल और सतपुड़ा के मध्य से होकर भरूच के पास खम्भात की खाड़ी में अरब सागर से जाकर मिलती है। नर्मदा वैराग्य की, गंगा जी ज्ञान की, यमुना जी भक्ति की, ब्रह्मपुत्रा तेज की, गोदवरी ऐश्वर्य की, कृष्णा कामना की और सरस्वती विवेक की स्थापना करने के लिए संसार में आई हैं। सनातन संस्कृति इनकी निर्मलता और ओजस्विता और मंगल भाव के कारण श्रद्धाभाव से इनका पूजन करती है। मानव जीवन में जल का अत्यंत महत्व है, प्रकृति और मानव का गहरा संबंध है। नर्मदा परिक्रमा में कुछ नियमपालन करना अत्यंत आवश्यक है। नियमों का पालन किए बिना परिक्रमा भलीभूत नहीं होती।

15 नवम्बर भगवान बिरसा मुण्डा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिवस जनजातियां अपनी संस्कृति को, विरासत को सुरक्षित रखने हेतु मनाती हैं। स्वतंत्रता संग्राम में जनजाती बंधुओं द्वारा जो बलिदान दिये गए उनका भी स्मरण किया जाता है। इस वर्ष भी यह गौरव दिवस भव्य पैमाने पर मनाया जायेगा हम सभी की इसमें सक्रिय सहभागिता हो ऐसा विनम्र निवेदन है। जनजाति बंधुओं को सनातन संस्कृति से दूर करने के कुत्सित प्रयास चल रहे हैं। हमारी सक्रियता इस षड्यंत्र को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। तो आइये स्वराज के इस अमृत काल में हम सब अपने जनजातीय बंधुओं को साथ लेकर अमर उद्घोष करें।

भारत माता की जय
हम हिन्दू हैं वनवासी हैं, हम सब भारतवासी हैं
बिरसा मुण्डा की संतानें, अजर-अमर अविनाशी हैं।

भारतीय जीवन मूल्यों का बोध कराती जीवन एवं मोक्ष दायिनी मां नर्मदा परिक्रमा

डॉ. उत्तम मोहन मीणा

भारत के सभी दर्शनों में है परिक्रमा का महत्व

पुण्य सलिला मां नर्मदा

भारत का समाज नदियों को पवित्र, पूज्य और ईश्वर तुल्य मानता है, उन्हे मां की उपमा देता है। मां नर्मदा की परिक्रमा का भी कुछ ऐसा ही धार्मिक - आध्यात्मिक महत्व है। प्रार्थना, प्रतिज्ञा, प्रकृति से एकाकार, त्याग, तपस्या जैसे पवित्र भावों से प्रेरित मां नर्मदा की परिक्रमा व्यक्ति के आत्म-जागरूकता और आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया को तेज करने, तीर्थयात्रियों को धर्म और मोक्ष की अनुभूति करवाने एवं उनकी भौतिक और अलौकिक इच्छाओं को पूरा करने का माध्यम है।

नर्मदा परिक्रमा करते "परिक्रमावासी"

नर्मदा परिक्रमा एक अद्भुत आध्यात्मिक अनुभव

भारत की पांच पवित्र नदियों में से यह एकमात्र ऐसी नदी है जिसकी उद्गम से विसर्जन एवं विसर्जन से उद्गम तक प्रदक्षिणा करने की परंपरा है। पश्चिम की ओर बहने वाली सबसे लंबी नदी होने के नाते, नर्मदा परिक्रमा एक दुर्जेय आध्यात्मिक अभ्यास, चुनौती और अविश्वसनीय यात्रा है। मध्य भारत सहित संपूर्ण भारत में श्रद्धालु प्रेम से इन्हें 'नर्मदा मय्या', 'नर्मदा माई', 'माँ नर्मदा' और 'रेव' (छलांग लगाने) से उत्पन्न होने के चलते 'माँ रेवा' पुकारते हैं। जीवन दायिनी नर्मदा जी के पूजन - आरती के पश्चात भक्त बड़े आत्मीय भाव से **'जल दे, जीवन दे, सर्व दे, हर - हर नर्मदे'** का उद्घोष करते हैं तो वहीं दिनचर्या के सामान्य अभिवादन में 'नर्मदे हर' का प्रयोग करते हैं।

परिक्रमा मार्ग और पड़ाव

शास्त्रों के अनुसार परिक्रमा हेतु यात्रियों को निर्देश है कि उन्हें पैदल यात्रा के रूप में ही प्रदक्षिणा करना चाहिए। जो लोग पैदल यात्रा नहीं कर सकते, वह सार्वजनिक अथवा निजी वाहनों के द्वारा भी परिक्रमा करते हैं। इस तरह का प्रचलन बढ़ने से अब कई ट्रेवल्स 12 से 15 दिनों के यात्रा पैकेज उपलब्ध करवा रहे हैं। इन सब के बाद भी माँ नर्मदा की परिक्रमा में दिनों दिन पदयात्रियों की संख्या में सतत वृद्धि हो रही है। धर्म परायण यात्री व्यक्तिगत अथवा छोटी-बड़ी मंडलियां बनाकर परिक्रमा पर निकल जाते हैं। अपने उद्गम अमरकंटक में कोटितीर्थ से 1312 किलोमीटर चलकर गुजरात में भरूच में मीठी तलई वह बिंदु है जहां नर्मदा अरब सागर में मिलती है। इस प्रकार संपूर्ण परिक्रमा पथ 2624 किलोमीटर का हो जाता है, किंतु नर्मदा जी पर स्थान - स्थान पर बन चुके बांधों के चलते बैक वाटर फैल गया है इस कारण यह यात्रा लगभग 500- 600 किलोमीटर लंबी हो जाती है। मार्ग में नर्मदा जी के उत्तरी तट से 19 और दक्षिणी तट से 22 कुल 41 सहायक नदियां और दोनों तटों पर लगभग 1000 से अधिक मंदिर या तीर्थस्थल पड़ते हैं जो यात्रा को और भी रोमांचक बना देते हैं।

परिक्रमा की अवधि

एक औसत परिक्रमावासी प्रतिदिन 20 - 30 कि.मी. पैदल चलता है। इस प्रकार वह इस यात्रा को अपनी क्षमता के आधार पर चार से पांच माह में पूरी कर लेता है। हालांकि यदि नियमानुसार नर्मदाजी की परिक्रमा की जाए तो 3 वर्ष 3 माह और 13 दिनों में पूर्ण होती है, कुछ लोग इसे 108 दिनों में भी पूरी करते हैं। सामान्यतः यात्रा उद्गम स्थल से प्रारंभ की जाती है किंतु बीच में भी किसी स्थान

से शुरू कर सकते हैं, लेकिन उन्हें अपना चक्र अवश्य पूरा कर पुनः वहीं लौटना होगा जहाँ से उन्होंने शुरू किया था।

परमार्थी और सहयोगी समाज

वर्षों से निरंतर चलने वाली परिक्रमा के पवित्र अभियान में हर समय हजारों परिक्रमा वासी चलते रहते हैं। लोगों को आश्चर्य होता है कि इतने सारे यात्रियों के विश्राम, पड़ाव, चाय- नाश्ते, भोजनादि की व्यवस्था कहाँ से होती है? कौन करता है?

वास्तव में नर्मदा जी के किनारे पर औसत 4-5 कि.मी. पर एक मंदिर-मठ या आश्रम में परिक्रमावासियों के लिए भोजन, विश्राम आदि निःशुल्क व्यवस्था रहती है। इससे भी महत्वपूर्ण नर्मदा जी के तट के आसपास निवास करने वाला समाज विशेष रूप से जनजातीय और ग्रामीण समाज, प्रत्येक परिक्रमा वासी को अपने परिवार का सदस्य मानकर उनके खाने-पीने एवं रहने की व्यवस्था पीढ़ियों से करते आ रहे हैं। गांव, बस्तियां, झोंपड़े, नगले, पुरबे आदि जिसे जिस स्थान पर विश्राम करना हो वो वही रुक जाता है, वह स्थानीय लोगों के अतिथि होते है। नर्मदा मय्या का प्रताप है कि इस यात्रा में कोई भी यात्री भूखा नहीं सोता। यात्री जहां रुकते हैं वहीं धर्म और अध्यात्म की चर्चा करना, कथा सुनाना, भजन-कीर्तन-सतसंग का क्रम चलता रहता है। इस यात्रा में आज भी भारत की प्राचीन संस्कृति और जीवन मूल्यों के दर्शन होते हैं, यदि कोई भारत को जानना चाहता हो तो उसे मां नर्मदा की परिक्रमा अवश्य करना चाहिए।

नेमावर में है नाभि स्थल भक्तो की है अपार श्रद्धा

नेमावर नाभि कुण्ड

नेमावर को मां नर्मदा का नाभि स्थल माना जाता है। नर्मदा परिक्रमा करने वाले श्रद्धालु नाव के जरिये नाभिकुंड पहुंचकर पूजा अर्चना करते हैं। बीच नर्मदा में स्थित नाभि कुंड पर दर्शन के लिए आम दिनों में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। यहां नर्मदा जयंती के अवसर पर विशेष पूजा अर्चना की जाती है। पंडितों के द्वारा विधिविधान से यहां पर श्रद्धालुओं को पूजा अभिषेक कराया जाता है।

महेश्वर में माँ नर्मदा का सुरम्य घाट

संपूर्ण भारतीय समाज के गौरव बिरसा मुंडा

हिमानी विरेन्द्र जाटवा

भारत राष्ट्र के इतिहास में महत्व रखने वाले भगवान बिरसा मुंडा उन सच्चे नायकों में से एक रहे हैं जिन्होंने उन्नीसवीं सदी में अपने क्रांतिकारी चिंतन, मनोवृत्ति एवं कार्यों से जनजाति समुदाय की दशा और दिशा दोनों बदलकर नवीन सामाजिक मूल्यों की स्थापना कर एक नए युग का सूत्रपात किया। स्वतंत्रता के लिए असंख्य नायकों ने अपने स्तर पर ब्रिटिश शासन तंत्र का प्रतिरोध किया। ब्रिटिश औपनिवेशिक भारत में जब धर्मांतरण एक बड़ी समस्या बन चुका था। सभी क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों का प्रवेश हो चुका था। अनेक क्षेत्रों में हजारों की संख्या वाले हिन्दू रिवार धर्मांतरित होने लगे तभी सदी के इस नायक ने मिशनरियों के षड्यंत्र से भरे तंत्र को हिला कर रख दिया। जनजाति भाई-बहनों को धर्म के प्रति एकजुट करना हो या फिर उनका नेतृत्व करना, इसके लिए वह अपनी युवावस्था में ही संकल्पित हो गए थे। निराशा में भी उन्होंने आशावादी होकर कार्य किया।

जनजाति समुदाय में जन्म लेने वाले बिरसा मुंडा राष्ट्र के उन पुत्रों में से हैं जो सनातन संस्कृति के साथ पूरी तरह से एकाकार हैं। उनके मन में अपनी संस्कृति के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव था ओर वह स्वयं वैष्णव संस्कारों के प्रति आस्थावान थे। बहला फुसला कर धर्मांतरण करने हेतु तैयार भोलेभाले स्वजनों को भी उन्होंने स्वधर्म का सही मार्ग दिखाया, साथ ही देश में स्थापित ब्रिटिश सत्ता की भी नाक में दम कर रखा था। वे जीवनपर्यंत उनसे लड़ते रहे क्योंकि उनका विश्वास था कि समाज का प्रत्येक वर्ग स्वाधीनता के लिए जागृत होगा तभी देशोद्धार हो सकेगा।

स्वाधीनता से स्वतंत्रता के लिए सतत संघर्ष करने वाला हमारा राष्ट्र आज कहाँ तक पहुँच चुका है? लेकिन, देश में बहुत कम लोग आज बिरसा मुंडा जी के संघर्ष और बलिदान से परिचित हैं। भगवान बिरसा के सनातन मूल्यों के प्रतीक होने के कारण वामपंथी और मिशनरियों ने स्वतंत्रता के बाद जानबूझ कर उनके बलिदान को कमतर बताया और उनके त्याग - बलिदान के पृष्ठ को भारत के इतिहास से मिटाने का प्रयास किया।

भगवान बिरसा एवं असंख्य जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को याद करने के लिए स्वाधीनताके 75 वें वर्ष में भारत सरकार के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा वर्ष 2021 से 15 नवंबर (भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में) को 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाए जाने का स्वागत योग्य निर्णय लिया। विगत वर्ष इस दिवस को देशभर में जिस उल्लास से मनाया गया इस वर्ष भी उसी प्रकार का उत्साह दिखाई पड़ रहा है।

केवल जनजातीय समाज को ही नहीं वरन सम्पूर्ण भारतीय समाज को उनका हृदयपूर्वक सम्मान करना चाहिए। कृतज्ञ राष्ट्र अपने नायक की जयंती पर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करता है। उनका जीवन हम युवाओं को सदैव प्रेरित करता रहेगा।

पाताल पानी का नाम हुआ टंट्या भील रेलवे स्टेशन

इंदौर- महू के पास चर्चित और विख्यात पातालपानी रेलवे स्टेशन का नाम स्वतंत्रता संग्राम के नायक रहे टंट्या भील के नाम कर कर दिया गया है। राज्य सरकार के इस अनुमोदन पर केंद्र सरकार ने मुहर लगाकर गजट नोटिफिकेशन जारी कर दिया है।

मारवाड़ केसरी दुर्गादास

राजपाल सिंह राठौर

यह बात उस समय की है जब पूरे देश में इस्लामी आक्रांता औरंगजेब हिंदुओं पर वज्रपात कर रहा था। दिल्ली के निरंकुश शासक के इशारों पर सृजन और निर्माण की इस भारत भूमि पर केवल रक्तपात और विध्वंस का घिनौना खेल खेला जा रहा था।

ऐसे विकट समय की आहट से कुछ वर्ष पूर्व जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह जी राठौर के मंत्रिमंडल में करणोत के ठाकुर श्री आसकरण सिंह जी राठौर व उनकी पत्नी नेत कँवर जी के घर जोधाणा से 45 किलोमीटर दूर सालवा कलाँ गाँव में 13 अगस्त 1638 को एक धीर-गंभीर बालक का जन्म हुआ जिसका नाम रखा गया दुर्गादास। अपने पिता की भाँति बालक दुर्गादास भी अपनी मातृभूमि मारवाड़ के लिए बड़े होकर एक समर्पित योद्धा बने और जोधपुर राज्य की सेना में भर्ती होकर समय के साथ बड़े अधिकारी बने। 1678 में महाराजा जसवंत सिंह जी की मृत्यु के बाद औरंगजेब मारवाड़ को हड़पना चाहता था और इसलिए उसने 36 लाख रुपये लेकर स्व. महाराजा जसवंत सिंह जी के भतीजे और अपने विश्वस्त इन्द्र सिंह को जोधपुर का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

वीर दुर्गादास व अन्य सभी राठौर राजपूत सरदार इस बात से बहुत निराश हुए क्योंकि स्व. महाराज जसवंत सिंह जी की मृत्यु के समय उनकी दोनों रानियाँ गर्भवती थीं और उन दोनों ने कुछ समय पश्चात एक-एक बालक को जन्म दिया था जिसमें से एक की जन्म के समय ही मृत्यु हो गई जबकि दूसरा बालक जीवित रहा जिसका नाम था अजीत सिंह राठौर। न्यायसंगत यह था कि बालक अजीत सिंह को उत्तराधिकारी घोषित किया जाता जबकि औरंगजेब ने गलत नियत से इन्द्र सिंह को उत्तराधिकारी घोषित किया। जोधपुर राज्य के न्यायप्रिय राजपूत सरदारों ने योजना बनाई और कुछ चुनिंदा सरदार दुर्गादास जी के नेतृत्व में बालक अजीत सिंह को लेकर दिल्ली गए और इस अन्याय के बारे में औरंगजेब से बात की।

औरंगजेब ने शिशु अजीत सिंह को मारवाड़ का उत्तराधिकारी घोषित करने के लिए एक शर्त रखी और वह यह थी की जोधपुर राजमाता अपने बालक अजीतसिंह के साथ इस्लाम स्वीकार कर ले। जब दुर्गादास और अन्य राजपूत सरदारों ने यह बात सुनी तो उनके रक्त में ज्वार आ गया परंतु वह समय चतुराई दिखाने का था। वे चुपचाप छल से औरंगजेब के चंगुल से निकल कर दिल्ली से जोधपुर के लिए रवाना हो गए। मुगल सेना को जब इसका भान हुआ तो वो दुर्गादास और राजपरिवार की महिलाओं तथा बालक अजीत सिंह का पीछा करने लगी। पूरे रास्ते में छोटी-मोटी लड़ाइयाँ हुई और जोधपुर की ओर से रणछोड़ सिंह जी राठौर अपने 70 वीर योद्धाओं के साथ दिल्ली से जोधपुर तक की इन लड़ाइयों में वीरगति को प्राप्त हुए। अंत में बालक अजीत सिंह के साथ वीर दुर्गादास राठौर जोधपुर पहुँचे और उसके बाद अगले लगभग 30 वर्षों तक मारवाड़ के रक्षक बनकर उन्होंने मुगलों के साथ छापेमार युद्ध किया, उत्कृष्ट कूटनीति व राजनीति का परिचय दिया और मारवाड़ को मुस्लिमों के हाथ जाने से बचाये रखा। वीर दुर्गादास के बारे में इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड लिखते हैं कि **'उनको न मुगलों का धन विचलित कर सका और न ही मुगलों की शक्ति उनके दृढ निश्चय को पीछे हटा सकी, बल्कि वो ऐसा वीर था जिसमें राजपूती साहस और कूटनीति मिश्रित थी'।**

वर्षों तक अपनी सूझबूझ व चतुराई से कभी युद्ध तो कभी संवाद से मुगल आक्रांता औरंगजेब से जोधपुर राज्य को बचाकर रखते हुए उन्होंने महाराजा अजीत सिंह जी को उनका राज्य व मान-सम्मान पुनः दिलवाया। अंततोगत्वा वही हुआ जो हमेशा से होता आया है। महाराजा बन चुके अजीत सिंह ने बहकावे मे आ कर अपने सबसे अनन्य और चिंता करने वाले विश्वासपात्र रक्षक पर अविश्वास किया और उस ज्ञानी-पराक्रमी व्यक्ति ने उसी दिन मारवाड़ का त्याग कर दिया। वे मेवाड़ से होते हुए उज्जैन चले आए। घोड़े पर ही अपना जीवन व्यतीत करने लगे। भगवान महाकाल और क्षिप्रा मैया को अपना जीवन समर्पित वह योद्धा एक सन्यासी की तरह अपने जीवन के अंतिम क्षण तक उज्जैन में रहा और वहीं अंतिम साँस ली। भक्ति, शौर्य, सूझबूझ और चतुराई के साथ अपने राज्य की रक्षा करना और जिस माटी में जन्म लिया उसका ऋण उतारना

गुरु नानक साहिब जब इंदौर आए, ओंकारेश्वर गए, फिर क्या हुआ, जरूर पढ़ें नानक जी के चमत्कार

बेटमा साहिब गुरूद्वारा

गुरु नानक का आविर्भाव जिन दिनों हुआ, उन दिनों मानव जाति अंधकार-युग में अपना जीवन व्यतीत कर रही थी। उसे सच्चा रास्ता दिखाने के लिए गुरु नानक देव जी ने यात्राएं कीं। गुरुनानकदेवजी मध्यप्रदेश में संभवतः महाराष्ट्र के नासिक शहर से होते हुए बुरहानपुर आए थे। बुरहानपुर में वे ताप्ती नदी के किनारे ठहरे। वहां से वे ओंकारेश्वर गए और ओंकारेश्वर से इंदौर।

श्री महिपत ने अपनी पुस्तक **'लीलावती'** में उनकी इंदौर यात्रा का वर्णन किया है। इसके अनुसार पवित्रता के पुंज, प्रेम के सागर गुरु नानक देव जी दूसरी उदासी (यात्रा) के दौरान इंदौर आए। उन्होंने यहां इमली का एक वृक्ष लगाया। यहीं पर गुरुद्वारा इमली साहिब स्थापित है। गुरुदेव ने लोगों को मूर्ति पूजा से रोका और शब्द की महत्ता बताई। कहते हैं कि जब लोगों ने आदर के साथ उनके चरणों को छूना चाहा तो वे लोग चकित हो गए। उन्हें केवल प्रकाश ही प्रकाश दिखाई दिया। यहां से गुरुनानक देवजी बेटमा की दुःखी जनता का उद्धार करने के लिए वहां पधारे। वहां पर गड़रिये रहते थे। उन्होंने गुरुजी का बहुत आदर किया, उनके उपदेश सुने। लोगों ने जब उनके समक्ष पानी के कष्ट के बारे में प्रार्थना की तो उन्होंने कहा कि उस जगह धन्ना करतार कहकर कुदाली से जमीन खोदो। लोगों ने ऐसा ही किया तो वहां पर मीठे पानी का झरना फूट पड़ा। आज वहां पर एक बहुत सुंदर गुरुद्वारा है।

गुरु नानक देवजी भोपाल में ईदगाह हिल और उज्जैन में शिप्रा नदी के पास उदासियों के अखाड़े में भी पधारे थे। गुरु नानक देवजी ने हर जगह यही उपदेश दिया कि ईश्वर एक है, उसे विभाजित नहीं किया जा सकता। वह सबका साझा है, वह हर एक के अंदर मौजूद है।

'तन धोते मन अच्छा न होई'

मानगढ़ पर्वत

कृष्णा निनामा

मानगढ़ पर्वत भारत के लिए अनेक कारणों से ऐतिहासिक स्थल है। राजस्थान के डूँगरपुर, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, बाँसवाड़ा गुजरात के महिसागर, पंचमहाल, दाहौद, मध्यप्रदेश के झाबुआ, आलीराजपुर, धार, बड़वानी, खरगौन, खंडवा और महाराष्ट्र के नंदूरबार, धूलिया, जलगाँव, नासिक सहित इस प्रकार इन 4 राज्यों के 3 करोड़ जनजाति समाज के लिए यह मानगढ़ पर्वत प्रेरणाभूमि है। मानगढ़ पर्वत के राष्ट्रीय गौरव के पक्ष को जन-जन तक पहुँचाने की आज महती आवश्यकता है।

मानगढ़ पर्वत पर स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हुए संघर्ष में जनजाति समाज की व्यापक सहभागिता और उनका बलिदान भारत को एकता के सूत्र में बाँधने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगा। अतः मानगढ़ पर्वत को अविलंब राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया जाना आवश्यक लगता है। मानगढ़ पर्वत के साथ भारत के भीलों का बलिदान स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है और यह भारत के ही बलिदानी वीरों की गौरव गाथा है। मानगढ़ पर्वत का राष्ट्रीय महत्व इसलिए भी है कि भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई का शंखनाद 1883 में ही संप सभा के गठन के साथ प्रारम्भ हो गया था। संप सभा के उद्देश्यों में स्पष्ट रूप से लिखा है कि -

(1) अंग्रेजों के पिट्ठू राजा, जागीरदार या सरकारी अधिकारी को बेगार मत दो। इनमें से किसी का भी अन्याय मत सहो, अन्याय का सामना बहादुरी से करो।

(2) गाँव-गाँव में पाठशाला खोलकर बच्चों व बड़ों में ज्ञान का प्रकाश फैलाओ।

(3) मेहनत से काम करो, खेती मजदूरी करके अपना व परिवार का जीवन बिताओ।

(4) अदालतों में मत जाओ और अपने गाँव के झगड़ों में गाँव की पंचायत के फैसले को ही सर्वोपरि मानों।

(5) स्वदेशी का उपयोग करो, देश के बाहर बनी किसी वस्तु का उपयोग मत करो।

(6) अपने बच्चों को संस्कारित करो। गाँव-गाँव और घर-घर में कीर्तन-व्याख्यान करो।

(7) भगवान में आस्था रखो, रोज स्नान व हवन करो, नारियल की आहुति दो, अगर पूरी विधि से इतना न कर सको तो कम से कम गोबर के कंडे पर घी की कुछ बूँदे डालकर हवन करने का नियम बनाओ।

(8) चोरी, डाका, लूटपाट मत करो।

(9) शराब मत पीओ और माँस मत खाओ।

संप सभा के गठन के 20 साल पश्चात् सन् 1903 में हजारों भीलों ने एकत्रित होकर अंग्रेजों से देश को मुक्त कराने का संकल्प लिया। इस हेतु संप सभा के प्रस्तावों को प्रभावी ढंग से लागू करने की कार्य योजना बनाई और उसका क्रियान्वयन शुरू कर दिया। राष्ट्रीय महत्व के उक्त नौ सूत्रीय प्रस्ताव के प्रभावी अमल का परिणाम यह हुआ कि मात्र दस साल में राजस्थान के बागड़ क्षेत्र और गुजरात के पंचमहाल में अंग्रेजी सत्ता की जड़ें हिलने लगीं। सन् 1913 के प्रारंभ में भीलों द्वारा देश की आजादी के लिए चलाये गए शान्तिपूर्ण, भक्तिमय एवं सशक्त आंदोलन को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने क्रूरतापूर्ण हिंसक तरीके का सहारा लिया। 17 नवम्बर 1913 को मानगढ़ पर्वत पर भारत की स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रभक्ति में लीन भील, आजादी के तब सबसे लोकप्रिय हुए गीत -

'कंबोई मारो वासो है, लिम्बड़ी मारो फेरो है
भूरेटिया नई मानु रे नई मानु रे।'

अंग्रेजों को ललकारता हुआ यह भजन अत्यधिक लोकप्रिय हो गया था और इस को गाकर स्थानीय जन स्वतंत्रता संग्राम के लिए दृढ़ संकल्पित हो रहे थे। उन भक्तिमय स्वतंत्रता सेनानियों पर अंग्रेजों ने गोली चलाकर नरसंहार की अतिनिन्दनीय घटना को अंजाम दिया। तत्कालीन सरकारी अभिलेखों के साथ जनश्रुतियों में 1507 निहत्थे भीलों की हत्या कर देने की कथायें प्रचलित हैं तथा जनश्रुति में तो हजारों पुरुष-महिलाओं के घायल होने की बात आज भी सुनने को मिलती है। मानगढ़ पर्वत पर अंग्रेजी शासन द्वारा गोविंद गुरू को फाँसी की सजा सुनाई गई और अन्य भीलों के नेतृत्वकर्ताओं को अनेक वर्षो का कारावास दिया गया। आजादी के लिए संघर्षरत इन भील योद्धाओं का शौर्य साहस और उनकी अहिंसक पद्धति आज भी भारतीय समाज को राष्ट्रीय उत्कर्ष के लिए दृढ़ संकल्पित होने की प्रेरणा देती है। भारत के इतिहास में खेद का विषय यह है कि आजादी के अमृत महोत्सव की बेला समाप्त होने को है और मानगढ़ पर हुए आजादी के आंदोलन को भारत में वैसी मान्यता नहीं है जैसी इसकी हो जाना चाहिए थी।

गत 5 वर्षो से मानगढ़ पर्वत को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने के लिए लगातार प्रयास हो रहे हैं। इस हेतु हम झाबुआ में जन संपर्क अंहियाँ लेकर घर-घर मानगढ़ का यह गौरवशाली इतिहास बताकर स्वाभिमान जागरण कर रहे हैं और मानगढ़ आकर वहाँ की मिट्टी को माथे से लगाने का आह्वान कर रहे हैं। इसी कड़ी में 1 नवंबर 2022 को मानगढ़ पर्वत पर मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र के 50,000 भील मानगढ़ पर एकत्रित होंगे और भारत सरकार से यह माँग करेंगे कि मानगढ़ पर्वत को राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया जाये तथा इस इतिहास को आने वाली पीढ़ी में स्वाभिमान जागरण के लिए शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाये।

आँवला नवमी पर्व

वैद्य रत्नदीप निगम

आँवला हमारी संस्कृति एवं परंपरा में केवल ऋतुफल अथवा औषधि ही नहीं है बल्कि उसका लोक सांस्कृतिक महत्व भी है। दीपावली पर महादेवी लक्ष्मी जी को अर्पण किया जाता है लेकिन इसके पीछे एक लोक कथा भी है। इस कथा के कारण शास्त्रों में आँवला नवमी के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भोजन करने का विधान किया गया है। आँवला अक्टूबर-नवम्बर अर्थात् शरद ऋतु में आने वाला फल है, इसका सेवन प्राचीन काल से च्यवनप्राश, अचार, मुरब्बा, सुपारी, रस के रूप में हमारी गृहिणी करती भी है और परिवार के भोजन में परोसती भी है। आँवले का औषधीय महत्व परिवार समझता भी है इसलिए इस आँवले को सामाजिक महत्व प्रदान करने के लिए हमारे ऋषियों ने आँवला नवमी के रूप में लोक पर्व स्थापित किया है। कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को आँवला नवमी मनाते हैं। मान्यता है कि इस दिन द्वापर युग का प्रारंभ हुआ था। इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने वृंदावन गोकुल की

गलियों को छोड़कर मथुरा की ओर प्रस्थान किया था, इसलिए आँवला नवमी के दिन वृंदावन की परिक्रमा प्रारंभ होती है। आज के दिन महिलाएं परिवार के साथ बैठकर आँवले के वृक्ष को सूत का धागा बाँधती है और परिवार सहित पूजा करती है। पूरा परिवार भगवान कृष्ण से सुख समृद्धि की कामना के साथ जन्म-जन्मांतरों के पापों से मुक्ति की प्रार्थना कर करता है क्योंकि मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण इस दिन सभी को पापों से मुक्ति का आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

लोक देवता

जीवन सिंह ठाकुर

गोगा देव : वीर गोगा देव भी लोक जीवन में देव माने जाते हैं। रामदेजी के शिष्य, मेहाजी के पुत्र हरमू जी भी लोक देवता है। बाबा राम देव जी के द्वारा समाधि लेने के आठ दिन बाद ही हरमू जी ने भी समाधि ली। इन्हें 'पीर' के रूप में पूजा जाता है। इन्हें शगुन शास्त्र का ज्ञाता माना जाता है।

तेजाजी मालवा, राजस्थान, निमाड़ में सर्वमान्य लोकदेव हैं। वीर, साहसी, जन कल्याणकारी थे। तेजाजी के स्थान गांव-गांव में हैं। नागपंचमी तथा तेजा दशमी पर इनकी व्यापक रूप से पूजा की जाती है। चढ़ावा चढ़ाया जाता है। नारियल, धूप दीए, प्रसाद चढ़ायें जाते हैं। तेजाजी सभी वर्ग जातियों में पूजे जाते हैं। दशमी पर ध्वज के साथ जुलूस निकलते है।

चलो, खोज निकालें...!

भगवान श्रीकृष्ण के जीवन के बारे में कुछ सवाल पूछे गए हैं। उनके उत्तर चौखाने में फंसे हैं। उन्हें ढूंढिए

1. भगवान श्रीकृष्ण का जन्म कहां हुआ था?
2. भगवान श्रीकृष्ण वासुदेव और देवकी की कौन सी वीं संतान थे?
3. भगवान श्रीकृष्ण के अत्याचारी मामा का नाम क्या था?
4. पिता वासुदेव ने भगवान श्रीकृष्ण को कौन सी नदी पार कर गोकुल में पहुंचाया था?
5. भगवान श्रीकृष्ण की पालक माता का नाम क्या था?
6. भगवान श्रीकृष्ण दूध पीते बालक थे, तब उन्हें मारने के लिए कंस द्वारा भेजी गई राक्षसी का नाम क्या था?

म	थु	रा	रा	गो	र	खा	का
पा	चा	व	ल	औं	मा	य	ठ
ल	ग	म	णि	पू	कं	मु	मां
र	मा	दू	त	बे	स	ना	डू
मा	उं	ट	ए	व्ह	रे	स्ट	ग
दे	मी	शि	उ	डी	सा	जी	य
आ	ठ	वी	दे	व	पा	क	शो
पा	शु	पू	त	ना	थ	व	दा

उत्तर - मथुरा, आठवां, कंस, यमुना, यशोदा, पूतना

नीचे एक कहावत का अर्थ दिया है। वह कहावत आकृति में दिए गए अक्षरों में छिपी है। कहावत पहचान कर लिखें।

अर्थ- हर तरह से अनुभवी होना।

उत्तर - घाट-घाट का पानी पीना

दीप पर्व

- गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'

एक दीप देश के विकास के लिए जला,
एक राष्ट्र भक्ति की मिठास के लिए जला।
सिन्धु पार सन्धि के प्रयास के लिए जला,
शेष अन्धकार में उजास के लिए जला।।

गाँव गाँव की गली गली प्रकाशमान हो,
खील सी खिले कली छली न विद्यमान हो।
सूर्य सा प्रकाश दीप दीप में समान हो,
दीप पर्व दीप्त हो अनन्त कीर्तिमान हो।।

लिंग वर्ग जाति भेद दूर हो समीप का,
झोंपड़ी गरीब की प्रसाद या महीप का।
शंख से विरोध भाव हो न मीत सीप का,
दीप पर्व है मिले सनेह दीप दीप का।।

एक दीप मौसमी बहार के लिए जला,
एक भ्रष्ट दुष्ट के सुधार के लिए जला।
एक संस्कार के प्रसार के लिए जला,
शेष दुर्निवार अन्धकार के लिए जला।।

रात है अमावसी समित्र चाँद ध्यान में,
कालिमा कलंक सी निरभ्र आसमान में।
तारिका समूह शक्ति क्षीण है वितान में,
अन्धकार का विराट राज है जहान में।।

बावरी अमा भरी विभावरी सँवार तू,
एक क्या हजार सूर्य भूमि पर उतार तू।
ज्ञान के प्रकाश को विनम्र हो पुकार तू,
और ज़िन्दगी खुली किताब सी निहार तू।।

एक दीप देश में फकीर के लिए जला,
एक दिव्य भव्य से अमीर के लिए जला।।

मालवा- एक सुरम्य बस्ती थी

डॉ. ओ.पी. जोशी

काफी वर्षों पूर्व एक लेख में पढ़ा था कि उज्जैन के पास होने से ये पूरा क्षेत्र अवंतिका कहलाता था। अवंतिका से यह मालवा किस प्रकार कहा जाने लगा इस पर लोगों के मत अलग-अलग है। सिंकदर के हमले के समय पंजाब निवासी जिन्हें मालवा जन कहा जाता था यहां आकर बस गये थे। कुछ इतिहासविदों का मत है कि मालव जन के यहां पर बसने से पूर्व मलवास नाम कजनजाति के लोग यहां रहते थे। सूर्य की उपासना करने वाले मालव जाति के लोगों का निवास भी यहां बताया गया है। यह एक पठार क्षेत्र है।

मालवा की जलवायु बहुत ही लुभावनी थी एवं यहां पर दिन की तुलना में रातें सदैव ठंडी रहती थीं एवं इसलिए इस शब-ए-मालवा कहा जाता था। वास्कोडिगामा ने यहां की जलवायु को विश्व में सर्वश्रेष्ठ बताया था। यहां की उपजाऊ मिट्टी एवं पानी की प्रचुरता के कारण यहां की एक कहावत 'मालव धरती गहन गंभीर डग डग रोटी पग पग नीर' काफी प्रसिद्ध थी। यहां औसत 100 से 110 से.मी. तक वर्षा होती है। यहां मानसूनी पतझड़ी वन पाये जाते हैं एवं एक समय मालवा क्षेत्र की 60 प्रतिशत से ज्यादा भूमि वनों से ढकी थी। बबूल, हर्रा, बहेडा, जामुन, करंज, सागौन, शीशम, सलाई, धावड़ा, अंजन, पलास एवं बांस के पेड़ यहां के वनों में पाये जाते हैं। अच्छी जलवायु एवं वनों की अधिकता से जहां जैव विविधता भी काफी थी। जहांगीर ने 17वीं शताब्दी में इस क्षेत्र के वर्णन में बताया था कि बुरहानपुर के पास आम की एक ऐसी प्रजाति थी जिसमें प्रत्येक आम आधा किलो से ज्यादा वजन का होता था। मांडव में उस समय बीज रहित केले की एक प्रजाति देखी गयी थी। उज्जैन के पास ज्वार की एक ऐसी किस्म थी जिसमें 10-12 भुट्टे लगते थे। एक समय यहां के मालवी एवं पिस्सी गेहूं भी काफी प्रसिद्ध थे। यहां की नर्मदा, ताप्ती एवं माही नदियां अरब सागर में जाकर मिलती हैं एवं चंबल तथा बेतवा, यमुना से मिलकर बंगाल की खाड़ी में समाती हैं।

वर्तमान में मालवा 12 जिलों से मिलकर बना है जिनमें इन्दौर, उज्जैन, धार, देवास एवं रतलाम आदि प्रमुख हैं। यह 04 लाख 7760 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला है। 80 प्रतिशत बेसाल्ट चट्टानों से बने मालवा के पठार की औसत ऊंचाई 450 मीटर है परन्तु कहीं कहीं 600 से 850 मीटर भी है।

विकास के तहत जारी कई मानवीय गतिविधियों के फल स्वरूप अब यहां की जलवायु में काफी बदलाव आ गया है। शब-ए-मालवा एवं **डग-डग रोटी पग-पग नीर** की कहावतें अब इतिहास का हिस्सा बन गया है।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

www.jagratmalwa.com

कम लागत में अधिक आय देती- प्राकृतिक कृषि

अशोक कुमार पाटीदार

जैविक खेती यह कोई नया विषय नहीं है। लेकिन इसे एक कांसेप्ट के तौर पर, एक पद्धति के रूप में विकसित करने का काम सुभाष पालेकरजी ने किया। हमारे यहां परंपरागत किसान पहले के समय में इसी विधि से कृषि कार्य करते थे । आजादी के बाद कई साल तक लोग बिना खाद और कीटनाशक के खेती कर रहे थे।

लेकिन हरित क्रांति के बाद ज्यादा अन्न उत्पन्न करने की रेस ने खानपान को विषैला बना दिया। अब इतना अनाज पैदा हो रहा है कि वो फ्री में बांटने के बावजूद तीन-तीन साल तक गोदाम में पड़ा सड़ रहा है। ऐसे में काफी कृषि वैज्ञानिक भी ऐसा महसूस कर रहे हैं कि अब समय बदलाव का है, जिसमें मात्रा की बजाय गुणवत्ता एवं शुद्धता पर बात करने की आवश्यकता है ।

पालेकर कृषि पद्धति में एक बात बहुत अच्छी है एक देसी गाय का पालन करने से 30 एकड़ कृषि भूमि पर प्राकृतिक खेती हो सकती है । यह भी दावा किया जा रहा है कि रासायनिक खेती की तुलना में प्राकृतिक खेती में महज 40 प्रतिशत ही पानी खर्च होता है आइए समझते हैं प्राकृतिक कृषि में किस तरह के खादों का प्रयोग किया जाता है एवं इन्हें कैसे बनाया जाता है ।

जीवामृत प्राकृतिक कृषि का सबसे आधारभूत तत्व है जीवामृत बहुत ही बढ़िया फफुंदनासी दवा है। छिड़कने से फफूंद का नियंत्रण होता है साथ में विषाणु नाशक, एंटी बैक्टीरियल भी है।

जीवामृत कैसे बनाना है

1. 200 लीटर पानी कुंवे, नदी तालाब डैम का नहीं होना चाहिए

2. देशी गाय का 10 लीटर गोमूत्र, 10 किलो गोबर ।

4 1 किलो गुड़ ,1.5 किलो बेसन/दलहन का आटा

5. एक मुट्ठी भर मिट्टी खेत की मेड़ अथवा पीपल, बरगद के नीचे से ले सकते हैं।इन सबका मिश्रण हम पानी के ड्रम में हम घोल लेते हैं । प्रातः एवं सायं हम इसको 25 बार क्लाक वाइज घुमाते हैं बोरी से ढक कर छांव में रखते हैं ताकि धूप ना लगे। 48 घंटे में जीवामृत तैयार हो जाएगा।

जीवामृत देने की विधियां

इस जीवामृत को सिंचाई के समय महीने में एक या दो बार दे सकते हैं । 1 एकड़ के लिए 200 लीटर जीवामृत पर्याप्त होता है । कोशिश करना चाहिए कि 12 से 15 दिनों में जीवामृत का उपयोग हम कर लें फसल पर छिड़काव के रूप में भी उपयोग करना चाहिए इससे अच्छे परिणाम आते हैं।

पौधे लगाने से पहले 6 महीने तक 200 मि.ली जीवामृत देना चाहिए दूसरे 6 महीने में प्रति पौधा 500 मि.ली डालना चाहिए दूसरे वर्ष 1 लीटर प्रति पौधा तीसरे वर्ष 2 लीटर बस इसी क्रम में एक 1 लीटर बढ़ाते जाएं पहला छिड़काव बीज बोवाई के 1 माह बाद प्रति एकड़ 100 लीटर पानी प्लस 5 मीटर कपड़े से छाना हुवा जीवामृत पौधे और भूमि पर एक साथ छिड़काव करना। पहले छिड़काव के 2-1 दिन बाद दूसरा छिड़काव दूसरे छिड़काव के 21 दिन बाद तीसरा छिड़काव प्रति एकड़ 200 लीटर पानी 20 लीटर जीवामृत के मान।

घन जीवामृत

वर्षा आधारित ऐसी खेती जहां सिंचाई के स्त्रोत न हो, रास्ते ठीक ना होने जहा जीवमृत का निर्माण असंभव हो ऐसे स्थानों पर वैकल्पिक रूप में घन जीवामृत उपयोग में लाना ।

बनाने की विधि

प्रति एकड़ 200 लीटर धूप में सुखाया हुआ और बड़ी छलनी, खटिया से छाना हुआ गोबर खाद ले उसे थोड़ा फैलाइए । जितना गोबर खाद हैं उसका 10 प्रतिशत अर्थात 20 लीटर जीवामृत उस पर छिड़क दीजिए, बाद में उसको फावड़े या हाथों से ठीक से मिला लें हर कण जीवामृत से संस्कारित होना चाहिए तत्पश्चात छाया में ढेर लगाइए उस पर बारिश और धूप नहीं गिरना चाहिए और 48 घंटे तक रखें ।शीतकाल में 4 दिन रखें, कड़ी धूप में सुखाइयें। दिन में दो बार उल्टा पुल्टा करें, सभी को सूरज की रोशनी से उपचार मिले। पूरा सूखने के बाद लकड़ी की मोगली से कुटे बाद में बोरी भरे सुतली से उसका मुंह बांधे जूट की बोरी में उसका भंडारण करेंगे 1 वर्ष की अवधि में इसका उपयोग कभी भी किया जा सकता है।

संसार की धुरी नारी

वंदना पुणतांबेकर

हमारे परिवार की धुरी नारी है और सारे विश्व में परिवार व्यवस्था हमारे भारत की देन हैं। नारी बिना परिवार और समाज की कल्पना करना संभव नहीं है। भारतीय जीवन में दृष्टिकोण के आधार पर आकलन किया जाए तो आदि काल से ही नारी के विचारों, गुणों और व्यावहारिकता के आधार पर बहुत ही सराहनीय और प्रशंसनीय घटनाएं हमारे राष्ट्र में घटित हुई हैं। नारी का समयानुसार प्रत्येक क्षेत्र में अति सराहनीय योगदान रहा है। सैद्धान्तिक आधार पर कमाल की अति उच्च समत्व की भावना यहां प्राचीन काल से ही विकसित हुई है। 'एकस्य तेजस द्वेज्योति' ऐसा स्त्री पुरुष की प्रकृति का वर्णन होता है। इसका अर्थ होता है कि दोनों में मूलतः एक ही तत्व विद्यमान है। प्रत्येक पुरुष और स्त्री की निर्मिति शिव और शक्ति तत्व से होती है। आवश्यकता के अनुसार दोनों अपने-अपने गुणों को प्रगट करते हैं। मूलतः वह एक ही है, इस बात को नहीं भूलना चाहिए। वेदों में अथवा अति प्राचीन साहित्य में समतत्व का विचार रखा गया है।अनेक संतों ने उसी प्रकार अनुभूति लेकर समतत्व की भावना को दर्शाया है। मराठी में संत ज्ञानेश्वर महाराज ने उसी तत्व को कहते हुए कहा है कि अर्धनारी नारेश्वर भी नारी को कहा गया है। कहा जाता हैं स्त्री और पुरुष दोनों के अंदर वही तत्व है जो पुरुष में है वही नारी के अंदर भी है। व्यवहारिकीकरण करते समय नारी समूह के प्रति अत्यंत विलक्षण भावों की संस्कार पद्धति को अपने यहां विकसित किया गया। माता का आदर करना यह हमारा स्थाई भाव है। निर्माण कार्य के प्रति सृजनता के प्रति नतमस्तक होने के स्वभाव के कारण नारी जाति का स्थान आदरणीय बन गया। जहाँ-जहाँ सृजन है वहाँ ऐसे विचारों का आदरपूर्वक देखने का उच्च दृष्टिकोण यहां प्रभावित हुआ। **'नमामि गंगे'** यह घोष आज से उत्पन्न नहीं हुआ। वैदिक काल से ही नदियों को माता के रूप में पूजा जाता है। नदियां तो हमारी जीवनदायिनी हैं। सारी सृष्टि के पोषण करने की क्षमता नदियों में होती है। गौ माता में भी पोषण करने की शक्ति विद्यमान है। और यहाँ मातृत्व तत्व हमें देखने को मिलता है। उस प्रत्येक नारी के प्रति श्रद्धा का भाव रखना, नतमस्तक होना हमारी सांस्कृतिक धरोहर के रूप में आज तक भारत में विद्यमान है। केवल दृष्टिकोण आदरणीय रहा ऐसा नहीं है। प्राचीन काल से अनेक उदाहरणों की श्रृंखला विद्यमान है। जैसे अपने तेज से सती सावित्री पूजन सीता ने किया। ऐसा उल्लेख मिलता है। वहीं सीता आज उस तेज के कारण वंदनीय हैं। सावित्रीबाई फुले ने आधुनिक शिक्षा का मार्ग महिलाओं को लिए प्रशस्त किया। लीलावती गणित के काम में प्रसिद्ध हुई। पर्यावरण रक्षणिका रामायण कालीन शबरी आदर्शमय जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करती है। युद्ध में नारियों की भागीदारी देखें तो नारियों का सहभाग पुरुषों के जैसा ही सहज और स्वाभाविक माना व देखा गया है। महाराष्ट्र की जीजाबाई से तो सभी परिचित हैं बाल शिवाजी को लेकर उन्होंने स्वराज्य की तूती फूंकी थी। संभाजी राव की माता सई का निधन उनको जन्म देते ही हो गया था। माता धाराऊ ने संभा जी को अपना स्तनपान करवाकर स्वराज्य रक्षक संभा जी राव को खड़ा किया। राजा राम की पत्नी तारा बाई राजनीति में निपुण मानी जाती थी। उसने लगातार सात वर्षों तक मुगलों को बड़ी चुनौती दी। सन 1725 से 1795 के दौरान अहिल्याबाई होल्कर ने धर्म निपुण, न्यायी और उत्कृष्ट प्रशासक के रूप में अपनी अमिट छाप छोड़ी।

चार इंजीनियर दोस्तों का अविष्कार सबको सुविधा दे रहा

आर्क रोबाटिक्स की शुरूआत चार इंजीनियर दोस्तों के द्वारा की गई। शुरू से ही इन चारों की रूचि रोबोटिक्स टेक्नोलॉजी में रही। 2018 में जब देश में स्वच्छता का बिगुल बजाया जा रहा था तब इन्होंने प्रथम स्मार्ट डस्टबिन बनाया जिसके सफल परीक्षण एवं प्रयोगों के बाद 2020 में महामारी के समय अपने स्टार्टअप की यात्रा प्रारंभ की। शुरू से ही टीम का झुकाव और रूचि ऐग्रिकल्चर एवं स्वच्छता की तरफ रही। रिसर्च के साथ-साथ इन्होंने स्कूल, कॉलेज एवं संस्थानों में कार्यशलाएँ भी कीं। जब 2019 में सारी दुनिया महामारी का सामना कर रही थी इस कठिन समय पर भी देश के डॉक्टर, पुलिसकर्मी, समाज सेवी के लिए आर्क रोबोटिक्स ने अपना एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। टीम ने लॉक डाऊन के अंतराल में संसाधनों के अभाव में देश की प्रथम अल्ट्रा-वॉइलेट सेनीटाइजिंग मशीन का निर्माण किया और मशीन को सबसे प्रथम मध्य प्रदेश के शाजापुर जिले में एक पुलिस थाने पर पुलिस की सामग्री को सेनिटाइज करने के लिए लगाया गया। इससे पुलिस कर्मियों, डॉक्टरों के उपकरणों को बिना किसी नुकसान के सैनिटाइज किया। धीरे-धीरे इस मशीन से खाद्य सामग्री जैसे- फल, सब्जियां आदि भी सैनिटाइज की जाने लगीं। जब 2020 में कोविड-19 का एक नया और भयानक रूप देखा गया, अस्पतालों में ऑक्सीजन की कमी के कारण लोगों ने अपनों को खोया। तब भी आर्क रोबोटिक्स ने अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए स्व-निर्मित ऑक्सीजन कंसंट्रेटर का निर्माण कर सेवायें प्रदान कीं। इन सभी उत्कृष्ट कार्यों के लिए आर्क रोबोटिक्स की टीम को नगर निगम इंदौर द्वारा पुरस्कृत किया गया।

पुरस्कार प्राप्त करते अविष्कारकर्ता

वर्ष 2021 में जब सब कुछ सामान्य हुआ तभी टीम ने अपने पुराने शोध में तेज गति लाते हुए शहरों के पेड़ पौधों पर जल संरक्षण के लिए पूर्व में तैयार किए गए एक्वा-स्मार्ट को सायाजी चौराहे के पास स्थित 200 मीटर के रोड डिवाइडर पर अपना यह उपकरण लगा कर वहा टैंकरों से डाले जा रहे जल का संरक्षण किया और निम्न समस्याओं से इजात दिलाने में मदद की -

1. पानी के टैंकरों द्वारा मैनुअल सिंचाई

2. ट्रैफिक जाम होना

3. संकीर्ण सड़कों पर ट्राफिक जाम तथा दुर्घटनाओं का खतरा बना रहता है

4. ओवर इरिगेशन से पानी की बर्बादी

5. कीचड़ के कारण शहरों की स्वच्छता की समस्या

6. पानी के टैंकरों की भारी ईंधन खपत

7. मैन पावर की कीमत

8. एक ही स्थान पर पानी पिलाने के लिए कई श्रमिकों की आवश्यकता होती है

9. अतिरिक्त मात्रा में सिंचाई से पौधों का मुरझाना

यह डिवाइस -

1. पौधों की वास्तविक पानी की आवश्यकता के अनुकूल पानी की पूर्ति करता है

2. स्मार्ट शहरों के विकास के लिए रियल-टाइम डेटा संग्रह करता है

3. मिट्टी की नमी, आर्द्रता, तापमान, हवा के वेग आदि के डेटा एकत्र करते समय स्वायत्त सिंचाई करता है

4. सिंचाई के दौरान पानी बचाने में मदद करता है

इस डिवाइस को इंदौर के प्रसिद्ध सायाजी चौराहे के सड़क डिवाइडर पर सफलता पूर्वक 6 माह के पायलट परियोजना के अंतर्गत स्थापित किया जा चुका है। यह डिवाइडर देश का पहला और एक मात्र स्वचलित सिंचाई डिवाइडर है।

जब बात शहरीकरण की हो तब शहरों के चेंबर का रखरखाव एवं साफ-सफाई को नकार नहीं सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद भी कई बड़े शहरों में आज भी मैनुअली चैंबर्स की सफाई की जाती है जो कि एक बहुत ही हानिकारक तरीका है। इस भयानक समस्या के समाधान के लिए आर्क रोबोटिक्स ने एक मशीन इन्वेंट की है जिसका नाम है क्रेट, जो कि स्वचालित है उसका सांप नुमा रोबोटिक आर्म चैंबर्स के चारों तरफ जाकर सफाई करने में सक्षम हैं यह रोबोट चैंबर्स की गतिविधि और प्रणाली की भी जांच करता है एवं यह भी बताता है कि आने वाले कितने समय में चेंबर को साफ करना अनिवार्य है, यह रोबोट चेंबर की मैपिंग करने एवं डाटा कलेक्ट करने में भी सक्षम है जो कि शहर अपने विकास के लिए इसे उपयोग कर सकते हैं।

वैभव श्री-महिला सशक्तिकरण का एक शक्तिशाली स्तंभ

आत्मसम्मान तथा समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने का लक्ष्य स्वावलंबन से ही साध्य होगा। नगरीय छोटी बस्तियों और ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से वैभव श्री के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों का निर्माण कर, अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा उन्हें प्रशिक्षण दिलवाकर विभिन्न हस्त निर्मित वस्तुओं के निर्माण के साथ-साथ उन उत्पादों के विक्रय की भी चिंता की जाती है। प्रांत में राखी, मिट्टी के गणेश जी, विद्युत झालर आदि बनाने का प्रशिक्षण व निर्माण वैभव श्री के माध्यम से दिया जाता है। साथ ही विभिन्न प्रकार के घरेलू उत्पाद व हस्तनिर्मित वस्तुओं का प्रशिक्षण व इनकी मार्केटिंग व निर्माण सामग्री कहाँ से उपलब्ध होगी, इन सब विषयों का समय समय पर प्रशिक्षण कर समूह को सक्षम बनाने का प्रयास किया जाता है। समूह के सदस्य अपनी आमदनी का कुछ भाग प्रतिमाह समूह में जमा करते हैं और इस जमाराशि में से ही आवश्यकतानुसार सदस्य को समूह के नियमानुसार ऋण दिया जाता है। इस ऋण से किसी ने किराने का व्यवसाय शुरू किया तो किसी ने कटलरी का, किसी ने अपने घर का सुधार कार्य करवाया तो एक ने इस राशि का उपयोग अपनी बेटी के विवाह के लिए किया। सभी सदस्य समय से ऋण चुका भी देते हैं। वर्तमान में मालवा प्रांत में लगभग 191 स्वयं सहायता समूहों का संचालन किया जा रहा है।

कन्वर्जन कर ईसाई या मुस्लिम हुए जनजातियों को जनजातीय की सूची से हटाने के लिये खरगोन में जनजातीय समाज ने विशाल डी-लिस्टिंग रैली निकाली।

खरगोन में हजारो की संख्या में जनजातीय समाज के लोगों ने पारंपरिक वेशभूषा में आकर हाथो मे तख्तियां लेकर एक साथ सरकार से आग्रह किया कि दो प्रतिशत जनजातीय लोग हिन्दू से ईसाई या मुस्लिम बन जाते हैं और 98 प्रतिशत जनजातियों का हक मारते हैं, जो जनजातीय ही नहीं रहा उसे जनजातीय की सुविधा पाने का कोई अधिकार नहीं है। इसलिये उन्हें तुरन्त जनजातीय की सूची से हटाया जाये।

पंडित बताकर 14 साल किया रेप: मां बनी तो भोपाल की युवती से बोला–अब मुस्लिम बन

भोपाल की एक महिला के साथ लव जिहाद का मामला सामने आया है। आरोपी ने खुद को पंडित बताकर दोस्ती की और शादी का झांसा देकर संबंध बनाता रहा। महिला गर्भवती हुई तो उस पर मुस्लिम बनने का दबाव बनाने लगा।

मध्य प्रदेश में लव जिहाद के एक मामले में जाहिद (दाएँ) गिरफ्तार

शाजापुर में लव जिहाद का मामला सामने आया है। आरोपी ने 14 साल पहले खुद को ब्राह्मण बताकर महिला को झांसे में लिया। फिर संबंध बनाता रहा। 7 साल पहले गर्भवती होने पर कोर्ट मैरिज भी कर ली। इसी दौरान पीड़िता को पता चला कि युवक मुस्लिम है। कोर्ट मैरिज के बाद आरोपी उससे मारपीट करने लगा। बच्चे के कारण वह उसकी प्रताड़ना सहती रही। शादी के 8 साल बाद पति उस पर हिंदू से मुस्लिम बनने का दबाव बना रहा है। पीड़िता शुक्रवार को अपने 8 साल के बेटे को लेकर शुजालपुर सिटी पुलिस थाना पहुंची। पीड़िता के साथ हिंदू जागरण मंच के कार्यकर्ता भी थे। पुलिस ने **शेख जाहिद उर्फ गामा पिता शेख सईद निवासी डाबरीपुरा, शुजालपुर** के खिलाफ दुष्कर्म और धर्मांतरण अधिनियम की धाराओं में प्रकरण दर्ज कर लिया है।

मांसाहार खाने का दबाव बनाते हैं - गामा का छोटा भाई शेख साजिद भी मेरे साथ मारपीट करता है। वह बेटे को भी जान से मार देने की धमकी देता है। मैं ब्राह्मण हूं, शाकाहारी भोजन करती हूं, लेकिन ससुरालवाले मांसाहार खाने और नमाज पढ़ने का दबाव बनाते हैं। मैं अपने परिवार के साथ भोपाल जाकर रहना चाहती हूं।

देश में सब पर लागू होने वाली जनसंख्या नीति बननी चाहिए – दत्तात्रेय होसबाले जी

जनसंख्या असंतुलन पर चिंता जताई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह जी ने। कहा कि देश में जनसंख्या विस्फोट चिंताजनक है। इसलिए इस विषय पर समग्रता से व एकात्मता से विचार करके सब पर लागू होने वाली जनसंख्या नीति बननी चाहिए। मतांतरण होने से हिन्दुओं की संख्या कम हो रही है। देश के कई हिस्सों में मतांतरण की साजिश चल रही है। कुछ सीमावर्ती क्षेत्रों में घुसपैठ भी हो रही है। सरकार्यवाह ने कहा कि जनसंख्या असंतुलन के कारण कई देशों में विभाजन की नौबत आई है। भारत का विभाजन भी जनसंख्या असंतुलन के कारण हो चुका है।

इंदौर में गर्भवती हिन्दू लड़की के साथ चार मुस्लिमो ने गेंगरेप किया, लड़की के विरोध करने पर कहा, हिन्दू लडकियों से संबन्ध बनाने पर जन्नत नसीब होती है

इंदौर की गणेशधाम कॉलोनी निवासी 19 वर्षीय युवती को नौकरी की आवश्यकता थी। उसने इंस्टाग्राम पर नौकरी की आवश्यकता के बारे में पोस्ट जारी की थी। करीब चार महीने पूर्व आरोपित अरबाज नामक युवक का मैसेज आया कि उसके दोस्त प्रिंस और अफजल विजयनगर में एडवाइजरी का काम करते हैं। उनके पास नौकरी लगवा देगा। 14 सितंबर को आरोपित अरबाज, प्रिंस, अफजल और सैयद युवती से मिलने रीगल तिराहे पर आए और समोसे में नशीला पदार्थ मिला कर खिला दिया। बेहोशी की अवस्था में आरोपित विजयनगर ले

गए और दोनों ने बारी-बारी से बलात्कार किया। पीड़िता के मुताबिक उसको गर्भ है। आरोपितों से इसके बारे में कहा तो प्रिंस ने कहा मुस्लिम समाज में सब चलता है। हिंदू लड़की से संबंध बनाने पर जन्नत नसीब होती है। इसके बाद आरोपित प्रिंस और अफजल ने उसके साथ दुष्कर्म किया। गुरुवार को पीड़िता दो वकीलों के साथ पुलिस आयुक्त हरिनारायणचारी मिश्र के पास पहुंची और पूरे सबूत सौंपे। शाम को पुलिस ने चारों के विरुद्ध केस दर्ज कर लिया। लड़की जनजातीय समुदाय से है।

रामराज्य रथयात्रा अंतिम बार 28 अक्टूबर को इंदौर में

दक्षिण भारत के संत स्वामी शक्ति शांतानंद महर्षि जी द्वारा हिंदू समाज को जोड़ने एवम राम मंदिर निर्माण को लेकर 30 वर्षों से रामरथ यात्रा निकाली जा रही है इस बार यह यात्रा रामरथ दिग्विजय यात्रा के रूप में निकल रही है। यात्रा अयोध्या से प्रारंभ होकर देश के विभिन्न राज्यों में 60 दिन में 15000 किलोमीटर चलकर गीता जयंती के अवसर पर पुनः अयोध्या पहुंचेगी।

यात्रा को विजयादशमी के दिन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रारंभ की। इसी कड़ी में यात्रा ने उज्जैन होते हुए इंदौर में 28 अक्टूबर को प्रवेश किया इंदौर के सामाजिक संगठनों द्वारा यात्रा का भव्य स्वागत किया। इंदौर में यात्रा लवकुश चौराहा से प्रारंभ होकर मरिमाता चौराहा, जिंसी, बड़ा गणपति, छत्रीबाग, राजमोहल्ला, कलेक्ट्रेट, माणिकबाग ब्रिज होते हुए अमरदास हॉल पहुंची जहां धर्म सभा हुई जिसमें साधु संत एवं बड़ी संख्या में हिंदू समाज उपस्थित रहा।

यात्रा में मंदिर निर्माण का मॉडल वाला एक बड़ा

वाहन रथ के रूप में चला जिसमें जिसमें प्रभु श्री राम विराजमान है।

इंदौर में यात्रा की व्यवस्था विश्व हिंदू परिषद, हिन्दू जागरण मंच, धर्मजागरण, सामाजिक सद्भाव व अन्य सामाजिक संगठन ने मिलकर देखी, यात्रा की सफलता श्रीरामजन्मभूमि पर मंदिर निर्माण होना है।

धार की भोजशाला मे बनी रंगोली देशभर मे हो गई वायरल, लोगों ने कहा और कितने साल

भोजशाला की मुक्ति एवं उसके गौरव की पुनर्स्थापना हेतु संकल्पित महाराजा भोज बसंतोत्सव समिति धार लंदन में कैद माँ वाग्देवी की मुक्ति के लिए 1952 से संघर्षरत है। लाखों लोगों का सत्याग्रह, जिलाबदर, शहादत अनेको यातना के बाद भी आज भी धार की धार जरा भी कम न हुई है। आंदोलन के साथ साथ समाज के सांस्कृतिक जागरण व शासन को सन्देश देने के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजित होते हैं। उसी तारतम्य में समिति द्वारा दीवाली मिलन व रंगोली प्रतियोगिता रखी जिसमे 30000 से अधिक धार वासी सम्मिलित गए। माँ की मुक्ति के संकल्प को स्मरण करा। 124 आकर्षक रंगोली बनी जिसमें विशेष रूप से भोजशाला परिसर में समिति द्वारा हर वर्ष 20×20 की बड़ी रंगोली जिससे समाज का सांस्कृतिक जागरण व भाजपा शासन को अपने वादों का आईना दिखाया जाता है। इस वर्ष रंगोली की थीम में भोजशाला व माँ वाग्देवी की प्रतिकृति बनी है जो शासन व जेहादियों की कैद में दिखाया गया है।

रंगोली के द्वारा में समिति ने मेरा घर कैद में है हम बच्चे कैसे पर्व मनायें। मेरे बच्चे कब माँ को बेड़ी से मुक्ति करोगे कब अयोध्या, मथुरा, काशी का गौरव युक्त करोगे की मांग का सन्देश सोशल मीडिया में जमकर वायरल होते ही भोजशाला मुद्दा फिर से सुर्खियों में आ गया।

उज्जैन में क्षिप्रा के तट पर मारवाड़ केसरी दुर्गादास राठौड़ की छतरी है, जो हम भारतीयों के लिए तीर्थ समान है।

दिसम्बर माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. ०३ डॉ राजेन्द्र प्रसाद जयंती
ता. ०७ सशस्त्र सेना झंडा दिवस
ता. ०८ स्नानदान पूर्णिमा
ता. २४ राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस
ता. २५ पं. अटल बिहारी वाजपेई जयंती
ता. २६ विनायकी चतुर्थी व्रत

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा
प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341